सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र

सामाजिक मनोविज्ञान के विकास के साथ ही यह प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण बनता जा रहा है कि सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र क्या है। वास्तविकता यह है कि सामाजिक मनोविज्ञान का कोई स्वतंत्र अस्तित्व न होने के कारण अन्य विज्ञानों के समान इसकी कोई सुस्पष्ट सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। वास्तविकता यह है कि हमारी सभी सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्रियाओं के मूल में कुछ मनोवैज्ञानिक कारक होते हैं। इस दृष्टिकोण से सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत उन सभी सामाजिक और वैयक्तिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है, जो व्यक्ति और व्यक्ति तथा व्यक्ति और समूह की अन्त:क्रियाओं के कारण उत्पन्न होती हैं। सामाजिक मनोविज्ञान की रुचि मानव के सामान्य व्यवहारों के अध्ययन में है अतः यह सभी प्रकार की वैयक्तिक क्रियाओं तथा व्यवहारों के अध्ययन में रुचि लेता है।

इसके अतिरिक्त, समूह में विभिन्न व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं, आचारों तथा विश्वासों में जो समानताएं पायी जाती हैं उनका अध्ययन करना भी इस विज्ञान के अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित है। इसी तथ्य को ऑटो क्लाइनबर्ग तथा अन्य दूसरे विद्वानों ने वर्गीकृत किया है:—

(a) ऑटो क्लाइनबर्ग के विचार → निम्न भागों में विभाजित किया

(i) सामान्य मनोविज्ञान तथा सामाजिक मनोविज्ञान की व्याख्या

(ii) बालक के समाजीकरण, संस्कृति तथा व्यक्तित्व के विकास का अध्ययन

(iii) वैयक्तिक तथा सामाजिक भिन्नता की विवेचना

(iv) अभिवृत्ति, मत, संचार तथा प्रचार की विवेचना

(v) सामाजिक अन्त: क्रिया, समूह की गत्यात्मकता तथा नेतृत्व का अध्ययन

(vi) सामाजिक व्याधिकी

(vii) राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक व्यवहार

(2) केज और शैंक के विचार →

(i) सामाजिक उद्दीपक और सामाजिक उद्दीपन की दशाएँ
(ii) सामाजिक उद्दीपकों से उत्पन्न होने वाली मनुष्य की प्रतिक्रियाएँ तथा अनुभव
(iii) व्यक्ति पर सामाजिक पर्यावरण के प्रभाव

⇒ सामाजिक मनोविज्ञान का वास्तविक अध्ययन क्षेत्र:—

सामाजिक मनोविज्ञान के वास्तविक अध्ययन-क्षेत्र को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है कि उन सभी मुख्य विषयों को संक्षेप में स्पष्ट किया जाय जिन्हें इस विज्ञान के अन्तर्गत विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानकर उनका अध्ययन करने पर बल दिया जाता है —

(i) अभिप्रेरणा (Motivation) →

अभिप्रेरणा व्यक्ति के व्यवहारों को एक दिशा देती है और इस तथ्य का निर्धारण करती है कि किस दशा में वह कितना सक्रिय होकर विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ करेगा। अभिप्रेरणाएँ ही व्यक्ति में तनाव और असन्तुलन उत्पन्न करके उसे एक विशेष ढंग से कार्य करने को बाध्य करती हैं।

(ii) सामाजिक प्रत्यक्षीकरण (social perception) → व्यक्ति जैसी ~~सामाजि~~ सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में रहता है, उसी के अनुसार उसके प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया का निर्धारण होता है। सामाजिक प्रत्यक्षीकरण मानव व्यवहार को समझने से सम्बन्धित एक प्रमुख अवधारणा है। इसमें प्रत्यक्षीकरण के विभिन्न पहलुओं तथा उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

(iii) अभिवृत्तियाँ (Attitudes) → व्यक्ति के सभी सामाजिक व्यवहार विभिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों से ही सम्बन्धित होते हैं। उदाहरण के लिए एक वर्ग का दूसरे वर्ग के प्रति सहयोग अथवा विरोध, एक व्यक्ति अथवा राष्ट्र का दूसरे से संघर्ष अथवा विरोध आदि विभिन्न प्रकार की अभिवृत्तियों का ही परिणाम होता है। अभिवृत्तियाँ कभी भी स्थिर नहीं होतीं बल्कि सामान्य अथवा

नियोजित आधार पर इनमें परिवर्तन भी होता रहता है।

(iv) समाजीकरण (Socialization) → वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाजीकरण इतनी महत्वपूर्ण प्रक्रिया इनके अन्तर्गत समाजीकरण करने वाली एजेन्सियों, विसमाजीकरण, पुनर्समाजीकरण, सामाजिक सीख तथा सामाजिक प्रतिमानों आदि का अध्ययन किया जाता है।

(v) संस्कृति तथा व्यक्तित्व (culture and Personality) → आज आधुनिक मनोविज्ञान की उप-शाखा के रूप में, 'सांस्कृतिक मनोविज्ञान' का पृथक रूप से विकास हो रहा है। सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक सन्दर्भ में मानवीय व्यवहारों का अध्ययन होने के कारण संस्कृति और व्यक्तित्व के अध्ययन पर विशेष बल देता है।

(vi) नेतृत्व (Leadership) → नेतृत्व के अध्ययन में नेता और अनुयायी को एक-दूसरे का पूरक मानकर उनके पारस्परिक सम्बन्धो का अध्ययन किया जाता है। शक्ति तथा सत्ता जैसी अवधारणाओं को नेतृत्व से सम्बन्धित मानकर सामाजिक मनोविज्ञान में इनका अध्ययन आरम्भ हुआ इसके अन्तर्गत नेतृत्व कितने प्रकार का होता है, यह मानव व्यवहारों को किस प्रकार प्रभावित करता है, नेतृत्व को प्रभावित करने वाले तत्व कौन-से हैं, नेतृत्व का निर्माण किन गुणों से होता है तथा नेता और अनुयायी मानसिक रूप से किस तरह सम्बन्धित रहते हैं। सामाजिक मनोविज्ञान नेतृत्व के इन सभी पक्षों का अध्ययन करके मानवीय व्यवहारों की विवेचना करता है।

(vii) प्रचार (Propaganda) → सामाजिक मनोविज्ञान प्रचार के विभिन्न तरीकों, उनके प्रभावो तथा प्रचार से उत्पन्न होने वाली अभिवृत्तियों आदि का अध्ययन करता है।

June
Su Mo Tu We Th Fr Sa Su Mo Tu We
1 2 3 4 5 6
10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20
24 25 26 27 28 29 30

(viii) जनमत (Public opinion)→ जनमत एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो किसी विषय अथवा निर्णय के प्रति जनता की प्रत्याशाओं अथवा प्रतिक्रियाओं को स्पष्ट करती है। इस दृष्टिकोण से सामाजिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत जनमत का निर्माण करने वाली दशाओं तथा उसके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

(ix) समूह-निर्माण एवं विकास (Group formation and development)→ सामाजिक मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार के समूहों के निर्माण, उनके विकास तथा प्रभावों का अध्ययन करने में रुचि लेता है।

(x) सामाजिक अन्तःक्रियाओं का अध्ययन (Study of Social interactions)→ सामाजिक मनोविज्ञान सामाजिक अन्तःक्रियाओं के विभिन्न स्वरूपों, जैसे — सहयोग, समायोजन, संघर्ष, प्रतिस्पर्द्धा तथा विरोध आदि के अध्ययन को विशेष महत्व देता है।

(xi) सामाजिक व्याधिकी (Social Pathology)→ सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र में अपराध, बाल अपराध, औद्योगिक संघर्ष, पक्षपात की भावनाओं तथा विभिन्न प्रकार के तनावों के अध्ययन को भी सम्मिलित किया जाता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वर्तमान दशाओं में सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन क्षेत्र निरन्तर अधिक व्यापक बनता जा रहा है। इस विषय का जैसे-जैसे विकास हो रहा है, इसके अन्तर्गत अनेक नई शाखाएँ विकसित होने लगी हैं। इससे यह आशा की जा सकती है कि भविष्य में सामाजिक मनोविज्ञान का अध्ययन-क्षेत्र और अधिक व्यापक बन जायेगा।